SUO-4556-T12824

"शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास का अनुशीलन"

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिन्दी)
उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोध-छात्र
श्री. संजय महादेव क्षीरसागर
एम्. ए. (हिन्दी)

शोध-निर्देशक
डॉ. पी. एस्. पाटील
एम्. ए. पीएच्. डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर-४१६ ००४.

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

अक्टूबर १९९५

* संस्तुति *

मैं संस्तुति करता हूँ कि, इस लघु-शोध
प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

३१ अक्टूबर ९५
कोल्हापुर

❋ प्रतिज्ञा पत्र ❋

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, डॉ. पी. एस. पाटील के निर्देशन में " शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास का अनुशीलन " यह लघु-शोध प्रबंध मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल् उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं और वे सर्वथा मेरे अध्ययन, अनुसंधान एवं चिन्तन की उपज हैं। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

(संजय क्षीरसागर)
शोध - छात्र

कोल्हापुर
दिनांक : ३१ / १० / १९९५.

डॉ.पी.एस.पाटील,
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४.

दिनांक :-२९/१० /९५

✻ प्र मा ण प त्र ✻

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री. संजय महादेव क्षीरसागर ने मेरे निर्देशन में '' शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास का अनुशीलन'' लघु-शोध प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबंधमें प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। संपूर्ण लघु-शोध प्रबंध को आद्योपांत पढकर ही मैं यह प्रमाण-पत्र दे रहा हूँ ।

(डॉ. पी. एस्. पाटील)
शोध निर्देशक

कोल्हापूर
दिनांक : २९/ १० /१९९५.

❋ प्राक्कथन ❋

आधुनिक हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास विधा सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा है। यह विधा जीवन और यथार्थ के अत्यंत निकट रही है। उपन्यास युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते मानव जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यास मानवी अनुभव की परिधि को बढाता है और जीवन के पतों को खोलकर हमारे सामने रखता है। उपन्यास को गद्ययुग का 'महाकाव्य' कहा गया है। वर्तमान युग में उपन्यास साहित्य का अधिक मात्रा में सृजन हुआ। आधुनिक युग में नारी - समस्या पर अनेक उपन्यास लिखे गए। शिवानी ने भी अपने उपन्यासों में इसी समस्या को उठाया है।

प्रेरणा

जब मैं तृतीय वर्ष बी.ए. में पढता था, तब से ही मुझे उपन्यास विद्या में रूचि थी। एम्.ए. में आते ही ऐच्छिक विषय के रूप में मैंने उपन्यास विधा को लिया। एम्.ए.में पर्दे की राणी, मृगनयनी, गबन, सागर लहरे और मनुष्य आदि उपन्यास अध्ययन में थे। इनके साथ ही मैंने और भी कुछ उपन्यास पढे। तब शिवानी का 'कृष्णकली' यह उपन्यास पढ़ते समय इस विषय का अनोखापन, नवीनता, काव्यमय भाषाशैली आदि विशेषताओं ने मुझे आकृष्ट किया था। अत: मैंने शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास को लेकर लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने का निर्णय लिया और मैं अपने शोधकार्य में कार्यरत रहा। जिसका परिणाम यह लघु-शोध-प्रबंध है।

'कृष्णकली' के संदर्भ में स्वतंत्र रूप में शोधकार्य अब तक संपन्न नहीं हुआ है। 'कृष्णकली' उपन्यास के अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न निर्माण हुए थे -

१) कोई भी रचनाकार अपनी अनुभूति को साहित्य के माध्यम से स्पष्ट करता है। कृष्णकली का सूक्ष्मता से वर्णन करने के कारण लगता है, क्या लेखिका को नायिका 'कली' जैसी परिस्थितियों से गुजरना पडा है ?

२) नायिका 'कली' विद्रोहिणी क्यों बनती है ?

३) 'कृष्णकली' के माध्यम से लेखिका का क्या उद्देश्य रहा है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए हैं।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय :

शिवानी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन आवश्यक होता है। इस अध्याय में मैंने शिवानी के जीवनवृत्त के अंतर्गत परिवारिक पृष्ठभूमि, बचपन और शिक्षा, विवाह, संतान, जीवनसंघर्ष एवं प्राप्त पुरस्कार तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत महिला लेखिका शिवानी ने जिन-जिन विधाओं में अपना योगदान दिया है, उनका नाम निर्देश किया है तथा शिवानी के कृतियों का भी नामनिर्देश किया हैं।

द्वितीय अध्याय

'कृष्णकली' का कथानक :

इस अध्याय में तात्विक विवेचन में मैंने उपन्यास का स्वरूप तथा कथावस्तु का स्वरूप दिया है।द्वितीय अध्याय में 'कृष्णकली' की कथावस्तु संक्षेप में दी गई है।अंत में उपन्यास का प्रारंभ, मध्य चरमसिमा और अंत के साथ साथ उपन्यास की विशेषताओं को लेकर निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय :

'कृष्णकली' पात्रों का सामान्य परिचय

तृतीय अध्याय में शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास के पात्रों का परिचय दिया गया है। प्रमुख रूप से नायिका 'कृष्णकली ' का विश्लेषण किया है। इसके साथ - साथ पन्ना, पार्वती, मुनीर, माणिक, वाणी, जया-माया, कुन्नी, जया-माया कीअम्मा, रोजी, आंटी आदि नारी पात्रों का सामान्य परिचय दिया हैं। पुरूष पात्रों में प्रमुख रूप से प्रवीर का विश्लेषण किया है। विद्युत रंजन, पाण्डेजी, स्वामी विदुरानन्दजी आदि पात्रों का सामान्य परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय :

' कृष्णकली' का प्रतिपाद्य :

इस अध्याय में 'कृष्णकली' के उद्देदश्य को स्पष्ट किया है। मानसिक वृत्तियों की जटिलता से जूझती नारी, समाज का एक कोढ : वेश्या रूप में नारी, सौंदर्याकर्षण का शिकार : नारी, मनोरूग्ण तथा अंन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त नारी, परिस्थिति के दायरे में फँसा नपुसंक बना पुरूष,भष्टाचार के परिणामों की ओर संकेत, पूँजीपतियों की स्वार्थपरकता, पाखण्डी साधु आदि का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय

'कृष्णकली' की भाषा-शैली

इस अध्याय में भाषा तथा शैली का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है। भाषा के विवेचन में शब्द - प्रयोग के विभिन्न रूप. भाषा सौंदर्य के साधन, मुहावरें और कहावतें, सूक्तियाँ, वाक्य विन्यास आदि का साधार अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शैली के स्वरूप का विवेचन करके 'कृष्णकली' में प्रयुक्त विविध शैलियों का - वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, नाटय, सांकेतिक, व्यंग्यात्मक, दृश्य, दिवा स्वप्न, विश्लेषणात्मक, गेयात्मक आदि का सोदाहरण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :

इस शीर्षक के अन्तर्गत 'कृष्णकली' के अनुशीलन के निष्कर्षों की प्रस्तुति एवं उसके अनुसंधान से प्राप्त उपलब्धियों को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

ऋण - निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहकार्य मिला,उन सभी का आभार प्रकट करना मैंअपनाकर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु-शोध प्रबंध श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटील.अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है । आपका मिला हुआ आत्मीय और मौलिक मार्गदर्शन अविस्मरणीय है । अत: उनके प्रति मैं बहुत ऋणी हूँ । आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है । आपके इस अनुगृह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है ।

साथ-ही-साथ श्रध्देय डॉ.वसंत मोरे, प्रा. तिवले, डॉ. अर्जुन चव्हान, डॉ. इरेश स्वामी, प्रा. सौ. माधवी जाधव, प्रा. शिवाजीराव जाधव, डॉ.सौ.वाय.एस.पवार के आत्मीय सहयोग एवं योग्य निर्देशन से ही मेरा यह छोटा-सा शोधकार्य संपन्न हुआ । अत: उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा कर्मचारी, विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल तथा पी. जी. विभाग के सभी कर्मचारियों का भी मैं आभार हूँ ।

मेरे सहयोगी मित्र प्रा.एस.के.पवार, प्रा.एस.पी.शिंदे, प्रा.एस.एस.जाधव, दिलीप पाटील, चंद्रकांत सूर्यवंशी, पी.बी. माने, ए.एम.साळुंखे,सचिन जाधव तथा भाँजा एम.सी.रणवरे,इनके अलावा जिन्होंने मेरी सहायता की उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इन विद्वजनों के साथ - साथ मेरे पूज्य माता - पिताजी, भाई-बहन, भाभीयाँ तथा क्षीरसागर परिवार के कृपाशीर्वाद के फल स्वरूप मैं अपनी मंझिल पा रहा हूँ। उनके ऋण का बोझ हमेशा मेरे सर पर है ।

परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप में जिन हितचिंतकों का मुझे हमेशा सहयोग मिलाता रहा, उन सभी का मैं एहसासमन्द हूँ ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करने का कार्य विजय कम्युनिकेशन सर्व्हिसेस, फोन नं. २८५११. ने किया । अत: उनका भी मैं आभारी हूँ।

(श्री.संजय महादेव क्षीरसागर)
शोध छात्र

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : ३१ / १० /१९९५.